॥ उपसंहार ॥

उपसंहार

मोहन राकेश को बहुमुखी, प्रतिभाशाली, बुलंदी व्यक्तित्व जैसे विशेषण कुछ अधूरे से लगते हैं। यों उनका किसी मामूली विशेषणों से बँधकर रहनेवाला व्यक्तित्व नहीं है। वे विशेषण से परे असाधारण रहे हैं। इसका प्रमाण तो आज तक उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर किये अनुसंधान हैं। वैसे तो अनुसंधाताओंने अपने अंदाज से देखने का प्रयास किया है। इसमें राकेश जी के नाटक भी नहीं छूटे। राकेश जी एक हिरा है जो किसी भी बाजू से देख तो वह चमकता है। उनका चमकना भी अद्वितीय है। सुख की परिस्थितियों में हर कोई व्यक्ति चमकता है। दु:ख की परिस्थितियों में चमकनेवाला राकेश जैसा व्यक्तित्व विरला ही है। बच्चपन से लेकर अनीता मिलने के पूर्वतक वे संघर्ष की चक्की में हमेशा पिसते ही रहे हैं। इस पिसावट में भी राकेश जी ने अपने व्यक्तित्व को कायम रखा। साहित्यकार को थंडे दिमाग की आवश्यकता होती है। तभी वह शांत मन से नयी रचना को दे सकता है। राकेश जी की यह शांति बच्चपन में पिता के देहवसान के कारण, वैवाहिक जीवन में उनकी पहली दो पत्नियों की लापरवाही के कारण नष्ट हो गयी है। शांती के लिए उन्हें घर की तलाश रही। यह तलाश आखिर अनीता के यहाँ खत्म हो गयी। लेकिन भगवान को यह मंजूर नहीं था कि इस शांती का उपभोग अधिक राकेश न करे। तभी राकेश जी को भगवान ने निमंत्रित किया। अपनी द्वंद्वात्मक स्थिति में भी दिमाग पर काबू पाकर उन्होंने श्रेष्ठ से श्रेष्ठत्तम साहित्य रचना की यह हिन्दी साहित्य का सौभाग्य है।

राकेश जी नाटक में विशेष रुचि रखनेवाले व्यक्ति थे। पहले से ही इसमें उन्हें अधिक आकर्षण रहा है। इसीकारण इस में नये-नये प्रयोग करते रहें। नाटक के जितने भी अंग रहे हैं उन सब पर अपनी छाप छोडकर चले हैं। रंगमंच और अभिनय की दृष्टि से उनके प्रयोग अधिक महत्त्वपूर्ण रहे है। राकेश जी नाटक की सफलता रंगमंच और अभिनय ही मानते थे। रंगमंच और अभिनय का हिन्दी नाटक

में ही रहा विकास प्रसाद काल में रुक गया। फिर धीरे-धीरे प्रसादोत्तर काल में रंगमंच और अभिनय का नये सिरे से विचार होने लगा। इसी विचार मंथन प्रक्रिया में राकेश जी श्रेष्ठ रहे है। प्रसाद के नाटक मंचन की दृष्टि से अधिक खर्चीले और क्लिष्ट रहे। इसीकारण नाट्यप्रयोगों में रुकावट पैदा हो गयी थी। राकेश ने अपने नाटकों को साहित्यिक एवं रंगमंचीयता की दृष्टि से बुलंदी पर पहुँचाया। यही कारण है कि राकेश जी के नाटकोंका प्रयोग अभी जहाँ-तहाँ होता रहता है।

नाटक अभिनीत होने के लिए ही होते हैं ऐसा मानकर राकेश जी ने नाटकों की रचना की। अभिनय के आधुनिक तत्वों का पालन करके ही उन्होंने नाट्य रचना की है। अभिनय की दृष्टि से राकेश जी के नाटकों के कथ्य अधिक विश्वसनीय रहे हैं। राकेश जी के कथ्य की यात्रा एक प्रकोष्ठ से शुरू होती है। यहाँपर ऐतिहासिकता का प्रभाव रहा है। कालिदास के जीवन को कथा का आधार बनाकर कर्म का महत्त्व, सर्जनशील साहित्यकारों का द्वंद्व आदि का सुन्दर चित्रण किया है। उनका दूसरा नाटक "लहरों के राजहंस" बौध्दकालीन है। यह प्रतीकात्मकता से भरपूर नाटक है। सुन्दरी (पार्थिव) गौतमबुध्द (अपार्थिव) के बीच तडफता नन्द (आत्मा) का सजीव चित्रण है। नन्द द्वारा दर्शकों से तादात्मीकरण साध्य करके उनके सामने प्रश्नचिन्ह उपस्थित किया है। आजकल के सामान्य लोगों की त्रासदी "आधे-अधूरे" में व्यक्त की है। बौध्दकालीन कथा से उतर यहाँ राकेश मध्यवित्तीय स्तर से गिरकर निम्नमध्यवित्तीय स्तर पर आये एक परिवार का सजीव चित्रण है। महानगरी जीवन में हो रहा अर्थ और काम का संघर्ष दिखाया। सभी आधे-अधूरे हैं और पूर्णता की तलाश में भटककर अन्त में भी अधूरे ही रहे हैं। महानगरीय मध्यवर्गीय परिवार के चित्रण से काश्मिर में स्थित टूरिस्ट क्लब में कथ्य की यात्रा चली। राकेश जी वहाँ जा पहुँचे पर वापस लौट नहीं। उनकी यात्रा को कमलेश्वरजी ने पूर्ण किया जो पूर्णतः कथ्य की यात्रा राकेश जी ने की है ऐसा लगता है। "आषाढ का एक दिन" से लेकर "पैर तले की जमीन" तक का कथ्य विश्वसनीय, आकर्षक एवं मौलिक रहा है जो अभिनय के लिए बडी सहायता करता है।

राकेश के पात्र भी सामान्य व्यक्ति जैसे हैं। नाटक में आये हुए पात्रों की विशेषता एकदम स्पष्ट है जो एक अभिनेता के लिए उसे अपना अध्ययन प्रस्तुत करने में बडी सरलता महसूस होती है। उनके नाटकों में पात्रों की बिलकुल भीड नहीं है। कम से कम ८ पात्र और ज्यादा से ज्यादा १२ पात्र रहे हैं। इनके कारण अभिनेता को अधिक सक्रिय रहने का अवकाश मिला रहता है। सभी पात्र अन्ततक सक्रिय रहते हैं। अनावश्यक पात्र की योजना नहीं हुई है। वैसे तो हर एक नाटक के पात्र में राकेश जी का व्यक्तित्व झाँकता हुआ नजर आता है। फिर भी सभी पात्र अभिनेय हैं।

संवाद की दृष्टि से राकेश जी का एक ढाँचा ही रहा है। पहले - पहल छोटे -छोटे संवाद, बीच में एकाध स्वगत छोटासा, अन्त में लम्बे - लम्बे संवाद। यही रूप उनके सभी नाटकों में देखने को मिलता है। लम्बे - चौडे संवाद नाटक में कहीं कोई दोष उत्पन्न नहीं करते। अन्त में पात्र अपने व्यक्तित्व को पूरी तरह से व्यक्त करना चाहता है इसी कारण ये संवाद लम्बे हो पडे हैं। पात्रानुकूल, प्रभावी, रोचक, नाटकीय आदि राकेश जी के संवादो की विशेषता रही है जो अभिनय के लिए अधिक उपयुक्त सिध्द हुई है।

भाषा भी अभिनयानुकूल रही है। पात्र की मनस्थिति, प्रसंग, स्थान आदि के अनुसार बदलती रही है, जो अभिनय को विश्वसनीय बनाती है। पहले दो नाटकों की भाषा ऐतिहासिकता का स्पर्श की हुए है। यह बात भाषा से ही समझती है। अन्य दो नाटकों की भाषा परिवार की चलती-फिरती एवं क्लब की भाषा रही है जो वातावरण निर्माण करने में बडी सहायक सिध्द हुई है। नाटक में जो भी दृश्य खडे किये हैं वे शब्द से ही खडे किये है। राकेश जी शब्द के शिल्पकार रहे हैं। यही शिल्पकारीता अभिनय के लिए उपयुक्त हो गयी है।

दृश्य के रूप में तो राकेश जी ने कमाल करके दिखाया है। एक ही दृश्यबंध पर पूरे नाटक को खेला है। "आषाढ का एक दिन" को प्रकोष्ठ में, "लहरों के राजहंस" को राजभवन सुन्दरी के कक्ष में, "आधे-अधूरे" को घर के एक कमरे में और "पैर तले की जमीन" को क्लब के बार में प्रस्तुत किया है।

अभिनय की दृष्टि से रुकावट न डालनेवाला दृश्य रहा है। दृश्य में उपस्थित मंचीय उपकरण भी अभिनेता के लिए सहायक हुए हैं। सभी दृश्य अभिनय की दृष्टि से क्षीघ्रपरिवर्तनशील, पात्रानुकूल, संचालनक्षम रहे हैं।

प्रयोगधर्मीता और बहुमुखी प्रतिभा को दिखाते हुए पार्श्वसंगीत व ध्वनि, वेशभूषा और प्रकाश आयोजन आदि के बारे में उचित संकेत दिया है। अभिनय के लिए सहायक रूप में इन बातों का होना आवश्यक है। आकर्षक, प्रभावी विश्वसनीय, सजीव अभिनय के लिए इन बातों की तो आवश्यकता होती है। नाटककार को भी चाहिए कि वह इन सब बातों का ध्यान रखके नाटक की रचना करे। राकेश जी ने इन सभी बातों का ध्यान रखा है। इसलिए राकेश जी के चारों नाटक अभिनेय है इसमें कोई शक नहीं।

राकेश जी ने जहाँ-तक अपनी प्रतिभा दिखायी है। लेकिन नाटक के जितने अंग होते हैं, - जैसे - नाटककार, निर्देशक, अभिनेता, नेपथ्यकार, संगीतकार, प्रकाश आयोजक, वेशभूषाकार, रंगभूषाकार आदि। इनमें निर्देशक नेपथ्यकार पर थोडा अन्याय किया-सा महसूस होता है। नाटक के प्रत्येक अंग के व्यक्ति को छूट रहती है कि वह अपनी प्रतिभा का प्रयोग करे। राकेशजी दृश्य को समझाते हुए मंचीय उपकरण के स्थान को समझाया है, वैसे ही नाटक संहिता में अभिनेता के संचालन का विश्लेषण किया है। वैसे तो निर्देशक व दृश्यकार को यहाँ छूट होना आवश्यक है। उन्हें भी अपनी प्रतिभा दिखाने का अवकाश हो। फिर भी अनेक नाट्यमंडलियोंने अपनी-अपनी प्रतिभा के अनुसार दृश्य का निर्माण किया है और प्रयोग भी मूल कथ्य को बिना ठेस पहूँचे किया है। नाटक में अभिनेता के संचालन के बारे में थोडा बहुत बताया ही जाता है। राकेश जी के नाटकों के नये संस्करणों में दृश्य का पहले संस्करणों-सा वर्णन नहीं है।

कुछ भी हो राकेश जी एक प्रयोगधर्मी कलाकार रहे हैं तो यह नहीं कि सभी प्रयोग सफल हो। कुछ सफल होते हैं कुछ असफल राकेश जी तो अपने प्रयोग में सफल रहे हैं। इसीकारण अभिनय के बारे में भी उनका प्रयोग सफल रहा है। अतः राकेश जी के सभी नाटक अभिनेय हैं।